Date: / /

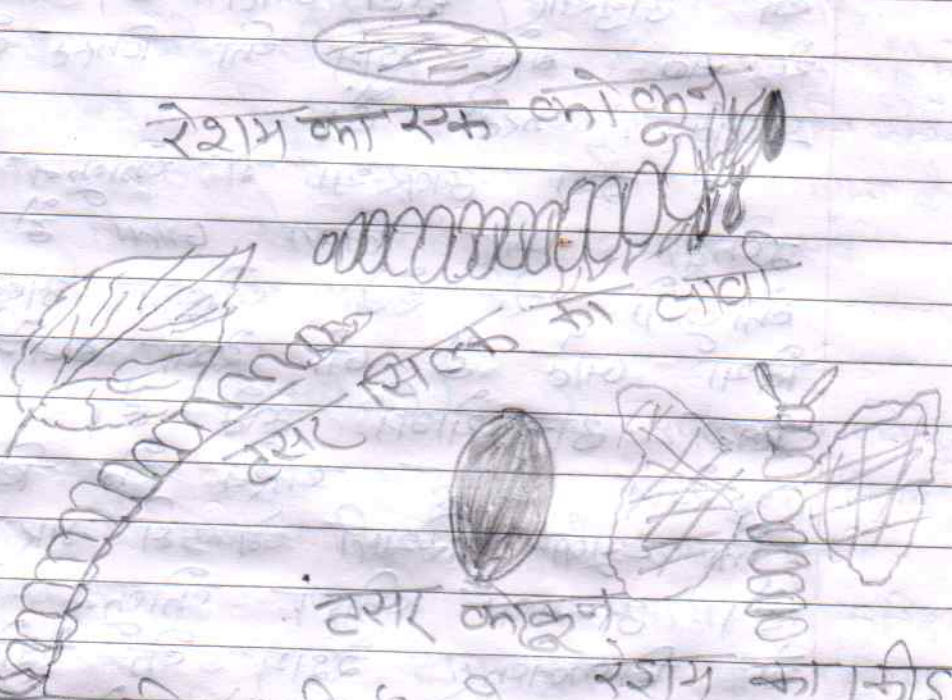

रेशम का उत्पादन : एक दृष्टि चक्र में

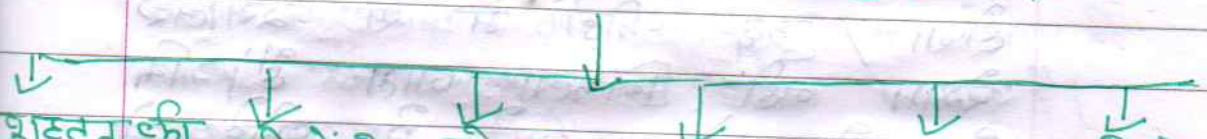

रेशम के कीड़े वर्ष में तीन बार निकाले जाते हैं।

जब कोकून बनाने का कार्य पूर्ण हो जाता है तब कीड़ा दस से पन्द्रह दिन तक इन्हें सेता है। तथा वह प्यूपा में परिवर्तित हो जाता है। जो कि उसके जीवन की तीसरी अवस्था है।

Date: / /

कोकूनों की छँटाई →

प्राप्त कोकूनों को उनके रंग आकृति आकार एवं रचना के अनुसार छाँटा जाता है। क्योंकि ये सब बातें रेशम की किस्म को प्रभावित करती हैं।

इस अवस्था में कोकून का इकट्ठा कर लिया जाता है इन कोकूनों से ऐसे कोकून अलग कर दिया जाते है जो रेशा बनाने के लिए अनुपयोगी होते हैं।

रेशम प्राप्त करने के लिए कीड़े को प्यूपा स्थिति में ही मार डालते है। अन्यथा कीड़ा कोकून में से निकलकर रेशम के रेशों को ऐसे असमान धागों में तोड़ डालेगा जिनका उपयोग करना सम्भव नहीं होगा / कुछ कीड़ों में से इसलिए रेशम नहीं निकला जाता है। कि वे बड़े होकर अंडे दे कीड़े से कागज पर अंडे दिलाये जाते है। फिर अण्ड़ों को छः सप्ताह तक शीत संग्रहालय में रखा जाता हैं। अण्डों को कागजों सहित गर्म पानी में धोया जाता है। अंडो को सेने में दस दिन का समय लगता है।

शुद्धिकरण → (Scouring) इन कोकूनों

Date: / /

पस्त बनाने के लिए उन्हें उबलते हुए साबुन के घुले पानी में डाल देते है फिर उन्हें भाप द्वारा गर्म हवा द्वारा सेका जाता है। जिससे कृमि अन्दर के कीड़े नष्ट हो जाते है। एवं रेशा जिस गोंद जैसे पदार्थ से ढका हुआ है वह नर्म हो जाता है इस क्रिया से रेशों में चमक एवं सफेदी आ जाती है।

ब्रुश करना → (Brushing) इसके उपरान्त कोकून को यन्त्र की सहायता से ब्रुश किया जाता है जिससे ऊपरी पर्त तथा ऐसा अनावश्यक पदार्थ हट जाये, जो लच्छियाँ बनाने के लिए अनुपयुक्त इस प्रक्रिया से रेशम निकलने वाले कोकून में रेशम के रेशे का सिरा मिल जाता है। तीन से आठ तक कोकून के रेशम के धागे को एक साथ लपेटा जाता है। इस प्रकार मिश्रित सूत एक दूसरे पर चढ़ते हुए लिपट जाते है।

सिल्क धागे का विनिर्माण →

(Spinning of silk yarn)

सिल्क की कताई विशिष्ट विशेषज्ञ कारीगरों के द्वारा होती है। रेशम की गाँठों को खोलकर फिर एक बार इन्हें रेशों के आकार आकृति रंग

Date: / /

लम्बाई, मात्रा बनावट आदि के अनुसार बाँधा जाता है। कारीगर अपनी निपुण अंगुलियों द्वारा स्पर्श से ही हर लच्छी की किस्म को पहचान लेते है।

गोंद छुड़ाना →

छंटाई के बाद लच्छियों को साबुन वाले गर्म पानी में रखा जाता है। इस प्रक्रिया से उनका सेरिसन थोड़ा नर्म ढीला पड़ जाता है और धागे के सम्भालना आसान हो जाता है इन लच्छियों को जब उनका जलांश सूख जाता है तब फ्रेम पर चढ़ाकर इनके छोटे बॉबिन पर लपेट दिये जाते है।

विरंजन → (Bleaching)

रेशम को विरंजित करने के लिए हाइड्रोजन, परॉक्साइड या सल्फर डाइऑक्साइड का प्रयोग किया जाता है। अशुद्ध रेशम का समस्त गोंदीय तत्व हटाना असम्भव-सा कार्य है। अपारित रेशम में और इनमें गोंद का तत्व बने रहने से स्पष्ट अन्तर बना रहता है।

रँगाई → (Dyeing)

ऊन के समान रेशम में भी रंग के प्रति अत्यधिक सादृश्यता होती है।

Date: / /

विशेषक अम्लीय रंगों के प्रति जोकि रेशम चमक उत्पन्न करते है। धूप मे और धोने पर भी वह रंग पक्का हो जाता है।

छपाई (Printing) रेशम के वस्त्र की रोलर ब्लॉक या स्क्रीन विधियो द्वारा छपाई भी की जा सकती है या उसको सादे रूप मे भी रखा जा सकता है साधारणतया रेशम को पहले रंगा जाता है फिर उसकी छपाई की जाती है।

परिष्कृति (Finishing) रेशम में प्राकृतिक रूप से इतनी चमक एवं कोमलता होती है। कि उसको परिसज्जा की बहुत ही कम आवश्यकता होती है।

रेशम को भारी बनाना → (Weighting of silk)

जब रेशम के सूत को बुनाई के लिए तैयार किया जाता है। तब सूत में भी गोंद हटाने के लिए उसे साबुन के घोल में उबाला जाता है। इस प्रक्रिया से रेशम के मूल भार में बीस से तीस प्रतिशत की कमी आ जाती है। तैयार सिल्क के ऐसे वस्त्र कहलाते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया